

कृ

37

मा क

ISBN: 81-88567-41-8

मूल्य : 170/- रुपये

संस्करण: 2008

लेखक : श्यामसुंदर दुबे

मुद्रक : क्वालिटी ऑफसेट नवीन शाहदरा दिल्ली-110032

शब्दांकन : मेगा ग्राफिक्स नई दिल्ली-110002

## अनुक्रमणिका

-	खण्ड - एक : नदी -आमुख	9 - 42
	1. धरती की वत्सल अनुभूतियों सी	11
	2. पहाड़ों की गंभीरता का उजलापन	23
	3. पाल-तनी-नावों सी स्मृतियाँ	33
	खण्ड - दो : नदी - विस्तार	43 - 125
	सिंधु	45
	सरस्वती	47
	गंगा	51
	यमुना	57
	शतलज	61
	झेलम	63
	सरयू	65
	गंडकी	69
	बागमती	71
	कोसी	73
	विशाला	79
	नर्मदा	83
	क्षिप्रा	89
	बेतवा	93
	सोन	97
	ब्रह्मपुत्र	101
	चंबल	105
	केन	109
	गोदावरी	113
	कृष्णा	119
	The second secon	

F
स्मृ
जैसी
ही वे
हो न
वन
निःशे
सब ह
हिफा
में अ
उड़ेलर
विषय
और १
वहती
-
अंतःस
समय
रहे हैं
प्रस्
जानक
रही है
अनेक
नदी 🖠
उभारा
men I
DIA-
SHOW
जापाक
मारिक
साहित
साहित निबंध
आवार साहित निबंधा
आवार साहित निबंधा में सर्गि
आवार साहित निबंधा में सड़ि भी उन
जावार साहित निबंधा में सांग्र भी उन
जावार साहित निबंधा में सांधि भी उन
जावात् साहित निबंधा में स्वि भी उन हति !
जावार साहित निबंधा में सांग्र भी उन हति
जावात् साहित निबंधा में सांधि मी उन हति ! स्लम!
जावात् साहित निबंधा में सांग्र भी उन मति मति मान
जावात् साहित्व निबंधा में साजि मी उन हति मान मान
जावात् साहित निबंधा में स्वी मी उन हति ! स्त्रमा भाग लाव
जावात् साहित निकंचा में सांचि मी उन मति ! मति ! मान मान मान
जावार साहित निबंधा में सीव भी उन हति सलग भाग स्ताब प्राथ
जावात् साहित निबंधा में स्वी मी उन हति । स्वमा भाग लाव प्रयम्
जावात् साहित नियंचा में सीचे मी उने मति ! स्तमा मार साम्

खण्ड - तीन : नदी-संक्षेप	7 - 136
वाणगंगा, रावी, व्यास, रामगंगा, कालीगंगा, ताप्ती	129
महानदी, तवा, हसदो, कालीसिंध, इन्द्रावती	130
बनास, माही, पार्वती, लूनी, सावरमती, आयड़, पिनाकिन, टौंस	131
पेरियर, उमियम, हुगली, बौगाई, दामोदर, मंदाकिनी, शिवनाथ,	132
रिहंद, कन्हार, माँड, अरपा, सबरी, हांप	133
पेरी, ईब, मनियारी, लीलागर, तांदुला	134
खारून, जोंक, बोराई नदी, कोटरी, डंकनी और शंखनी, नारंगी नदी	135
गुदरा, बाघ	136

46

